भट्टनायक
का
मंतव्य

एम्.ए – II सेमेस्टर

डॉ उमा शर्मा
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
एन.ए.एस (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ

3) भट्टनायक का मन्तव्य - रस-भुक्तिवाद

रस - सूत्र के तृतीय व्याख्याकार भट्टनायक है। इनके मतानुसार विभावादि के द्वारा भोज्यभोजक रूप संबंध से सामाजिक को रस का भोग या आस्वादन होता है। इसी हेतु यह मत रस - भुक्तिवाद कहा जाता है इनका मत सांख्य - सिद्धांत पर आधारित है।

न - अभिव्यक्तिवाद

भाव यह है कि अभिनय से संबंध रखने वाले तीन प्रकार के व्यक्ति है - एक अनुकार्य (नायक, रामादि), द्वितीय अनुकर्ता (नट) और तृतीय सामाजिक, क्योंकि सामाजिक से ही रसास्वादन का विषय संबंध है अतएव यहाँ नायक तथा नट को तटस्थ (उदासीन) कहा गया है।

तात्पर्य है कि नायक या नट में रस की प्रतीति उत्पत्ति अनुमिति नहीं होती, क्योंकि अभिनय काल में राम आदि नायक विद्यमान नहीं है, अतः उसमें रस, जिसका तात्पर्य यहाँ पर स्थायी भाव है कैसे प्रतीत हो सकता है और काल्पित विभावादि से नट में भी वही आदि की प्रतीति नहीं हो सकती क्योंकि अनुमान द्वारा असत् वस्तु का ज्ञान नहीं हो सकता।

इसी प्रकार यह लौकिक रति आदि भाव यहाँ उत्पन्न भी नहीं हो सकता।

भट्टलोल्लट आदि ने माना है क्योंकि यहाँ सीतादि विभाव वास्तविक नहीं, अतः उनको द्वारा रत्यादि की उत्पत्ति कैसे संभव है? सामाजिक के हृदय में भी रस की उत्पत्ति या प्रतीति नहीं हो सकती। क्योंकि विभावादि का सामाजिक से कोई संबंध नहीं स्थायी भाव रसी रस की अभिव्यक्ति भी नहीं नट आदि में ही संभव है न सामाजिक में क्योंकि अभिव्यक्ति उस वस्तु की होती है जो विद्यमान हो, किन्तु यहाँ रस पहले से विद्यमान नहीं है अतः उसकी व्यञ्जना भी कैसे हो सकती है? भाव यह है कि स्थायी भाव रूपी रस की उत्पत्ति अनुमिति या अभिव्यक्ति होना संभव ही नहीं है

अपि च श्रूयते -

भट्टनायक के अनुसार काव्य तथा नाटक के शब्दों में अभिधा एवं लक्षणा वृत्ति से भिन्न एक विलक्षण शक्ति रहा करती है। यह विलक्षण शक्ति को ही भावना या भावकत्व व्यापार कहते हैं।

ये विभावादि व्यक्तिविशेष की रति आदि स्थायी ~~भाव की स्वगत परगत आदि कल्पना से मुक्त~~ भाव से संबंध रखते है — ऐसी प्रतीति नही होती अपि तु साधारण रूप से व्यक्तिमात्र से संबद्ध रूप मे इनकी प्रतीति होने लगती है। तभी सहृदयजनों को रस-मुक्ति होती है।

उनके हृदय मे रजस् और तमस् को अभिभूत करके सत्वगुण आविर्भूत हो जाता है सत्वगुण प्रकाशमय है, आनंदमय है, अतः इसके द्वारा एक ऐसी अनुभूति होती है जो प्रकाशमयी और आनंदमय होती है तथा जिसमें अन्यान्तर का सम्पर्क नही रहता इस प्रकार की आनन्दात्मिका संवित् ही रस का भोग है, साक्षात्कार है। वैसे ही शैव दर्शन मे विमर्श कहते है।

भट्टनायक के मत का सार

काव्य-नाट्य मे शब्द के अभिधा व्यापार के समान ही भावकत्व तथा भोजकत्व नामक व्यापार होते है। काव्यार्थ-बोध होने के पश्चात् भावकत्वव्यापार द्वारा सीतादि रूप विभावादि तथा नायकगत रति आदि का साधारणीकरण हो जाता है और सहृदयजन भोजकत्व व्यापार के द्वारा उसका आस्वादन कर लेते है।

4

भट्टनायक की देन

भट्टनायक का मत यद्यपि आज सिद्धांत मत नहीं माना जाता, तथापि रस-सिद्धांत में भट्टनायक की एक अपूर्व देन है वह है - साधारणीकरण।

काव्य आदि कलाओं का एक विलक्षण व्यापार साधारणीकरण कहलाता है, इसके द्वारा विभावादि सामान्य रूप से सामाजिक को समक्ष प्रस्तुत होते हैं।